सुर्य और आदित्य

–

आदित्य और सूर्य दोनो अत्यन्त महत्वपूर्ण नाम हैं, करीब करीब समान नाम रुपवाले है । इसकी पुष्टि अथर्व १३–२–२९ और ऋक् ६–५२–५ करते हैं । इस का निर्देश इस लेख के प्रारम्भ में ही कर दिया गया है । कुछ अन्य मन्त्र देखिये उदयप्रदसौ सूर्य: पुरु विश्वानिजूर्वन् । आदित्य: पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्ट हा ।। ऋक् १–१९१–९

ऋषि:– अगस्त्य: । देवता – सूर्य: । छन्द: विराडनुष्टुप् ।

(असौ सूर्य: विश्वानि पुरुजूर्वन् उदयप्रद्) हमारे सामने उदित होता हुआ सूर्य सब रोग कृमियों को अच्छी तरह नष्ट करता हुआ उदय होता है । (विश्वदृष्ट:) संपूर्ण विश्वसे देखा गया यह सूर्य ही (आदित्य:) अपनी किरणों से रोग कृमियों के प्रभाव को खीच लेनेके कारण (आदानात्) आदित्य कहाता है । यह (पर्वतेभ्य:) गतिशील कर्मठ मनुष्यों के लिए (अदृष्टहा) अदृष्टकृमियों को नष्ट करने वाला है ।

निष्कर्ष – इस मन्त्र में स्पष्ट रुप से सूर्य और आदित्य को एक ही माना गया है ।

उदित होते हुए सूर्य का दर्शन सर्व रोग हर है ।

१) उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तएं दिवम् । हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशया ।। ऋक् १–५०–११

ऋषि – प्रस्कण्व:काण्व: । देवता – सूर्य: । छन्द: – अनुष्टुप् ।

हे (मित्रमह सूर्य) रोगों से मित्रवत् रक्षा करने वाली दीप्ति से युक्त सूर्य (अद्य) आज (उद्यन्) उदय होते हुए (उत्तरां दिवं आरोहन्) ऊपर द्युलोक में आरोहण करते हुए (मम हृद्रोगम्) मेरे हृदय सम्बन्धी रोग को (चहरिमाणं विनाशय) और पीलिया रोग के कारण उत्पन्न शरीर के पीलेपन को नष्ट कर दे ।

उदीयमान सूर्य के दर्शन से, शरीर के प्रत्येक अंग को लाभ होता है ।

२) अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरहंस: पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदिति: सिन्धु: पृथिवी उत द्यौ: ।। ऋक् १–११५–६

ऋषि: –कुत्स आंगिरस: । देवता – सूर्य: । छन्द: त्रिष्टुप् ।

हे (देवा:) सूर्य की रश्मियों ! (अद्य सूर्यस्य उदिता) आज सूर्य के उदय होने पर (अवद्यात् अंहस: नि: पिपृत) हमें अवाच्य (निन्दनीय) पाप से निकालकर पूरण कर दो – रोग रुपी पाप से मुक्त कर दो । सूर्य का रोग निवारक रुप ऐसी कृपा करे कि (न:) हमारे (आदिति:) अविनाशी आत्मा (पृथिवी) शरीर (अन्तरिक्षम) हृदयान्तरिक्ष (द्यौ:) मस्तिष्क तथा (मित्र:) प्राण और (वरुण:) अपान मिलकर (मामहन्ताम्) हमें आदरणीय बनादें ।

सर्वथा नीरोग रहने व सुपुत्र चाहने वाले को उदीयमान सूर्य का दर्शन करना चाहिये

३) विश्वाहा त्वा सुमनस: सुचक्षस: प्रजावन्तो अनभीवा अनागस: ।
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवे दिवे ज्योजीवा: प्रति पश्येम सूर्य ।। ऋक् १०–३१–१

ऋषि: – सौर्योऽभितपा: । देवता – सूर्य: । छन्द: –जगती ।

पूर्ण तपस्वी बनकर सूर्य व्रती बनने की कामना वाले ऋषिके उद्‌गार हैं – (सुमनस: सुचक्षस: प्रजावन्त:) उत्तम मनवाले, उत्तम दृष्टिकोण वाले तथा उत्तम सन्तान वाले (अनमीवा: अनागस:) नीरोग और निरपराध रहकर (ज्योग जीवन्त:) दीर्घकाल तक जीनेवाले हम (दिवे दिवे) प्रतिदिन, (मित्रमह: सूर्य) अपने सखा को पूज्य बनाने वाले सूर्य ! (उद्यन्तं त्वा प्रतिपश्येम) उदय होते हुए (विश्वाहा) प्रतिदिन आप को देखें ।

निष्कर्ष :– उदय होते हुए सूर्य को प्रतिदिन देखने के परिणाम स्वरुप :

(१) मनुष्य मन का शान्त रहता है (२) दृष्टिकोन सम्यक रहता है

(३) उत्तम सन्तान होती है (४) नीरोग रहता है

(५) कोई अपराध नहीं करता (६) आयुदीर्घ होती है ।

४) उदीयमान सूर्य के दर्शन से द्वेष भावना दूर होती है

उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसासह । द्विषन्तं मत्वं रन्धयन्,
मो अहं द्विषतेरघम् ।। ऋक् १–५०–१३, अथर्व ११–२–३४

ऋषि:– प्रस्कण्व: । देवता – सूर्य: । छन्द:–अनुष्टुप् ।

(अयं आदित्य:) यह सूर्य (विश्वैन सहसासह) संपूर्णतया रोगों का पराभव करने वाले बल के साथ यह (मत्वं द्विषन्तं रन्धयन्) मुझ से द्वेष करनेवाले रोगों को नष्ट करता हुआ (उदगात्) उदय होता है । (३) और यह भी करता है कि (अहं द्विषते मा रधम्) में द्वेष करनेवाले रोग के आक्रमण में हिंसित न होजाऊं । रध्यतिर्वशगमने । निरुत्म ६–६–३२

इस मन्त्र को दवेता सूर्य माना है । लेकिन मन्त्र में आदित्य प्रयुक्त हुआ है । यह भी इन दोनों सूर्य और आदित्य की एकता का प्रमाण है ।

उदीयमान सूर्य से पूर्व ही – प्रासावीद् देव: सविता जगत्पृथक् । ऋक् १–१५१–१
सविता देव अपने प्रकाश से जगत् की प्रत्येक वस्तु को पृथक् पृथक् दर्शा देता है ।
ब्रह्मासे प्राप्त वेदज्ञान और आदित्य से प्राप्त तेज से मनुष्य सहस्रायु बन सकता है ।

५) प्रजापते रावृतो ब्रह्मणा वर्मजाहं कश्यपस्य जोतिषा वर्चसा च ।

जरदष्टि: कृतवीर्यो विहाया: सहस्रायु: सुकृतश्चरेयम् ।। अथर्व २१–१–२१

ऋषि: – ब्रह्मा । देवता – आदित्य: । छन्द: – जगती ।

(प्रजापते: ब्रह्मणा वर्मणा) प्रजाओं के रक्षक स्वामी परमेश्वर के वेद (ज्ञान) रुपी कवच से (च) और (कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा) सूर्य के प्रकाश व तेज से (आवृत:) ढका हुआ–सुरक्षित (अहं जरदष्टि:) मैं जरावस्था को प्राप्त हुआ (सहस्रायु:) दीर्घायु (कृतवीर्य:) वीरता के कर्मों से सम्पन्न (विहाया:) विविध गति वाला बनकर (सुकृत:) उत्तम कर्म करता हुआ (चरेयम्) जीवन में विचरण करुं ।

अर्थ–पोषण – ब्रह्म ईश्वरो वेदस्तत्वं तपोवा । यद् बृंहतिवर्धते तत् । उजादि–४–१४१
कश्यप: – पश्यको भवति, यत्सर्वं परिपश्यतीति । तै.आ.१–८–८ परमेश्वर: सूर्योवा ।
कश्यप:– कश्य: कष्टेगच्छतीति तं पातीति – रोग से प्रप्त कष्ट का रक्षक – सूर्य स्वाद्वया ।
सहस्रायु:– (१) सहस्रं बहुनामसु । नि.३–१ दीर्घायु (२) आयु: अन्ननामसु । नि २–१ बहुत मनुष्यों को अन्न देने वाला (३) सहस्र – हासयुक्त मन से भोजन करने वाला, जो कुछ मिल जाए उसे प्रसन्न मन से खाकर सन्तोष करनेवाला (४) शातायुकी तरह 'सहस्रायु:' का अर्थ हजार वर्ष तक जीवित रहना ।

निष्कर्ष – ऋग्वेद में मनुष्य की आयु की १०० वर्ष से १५० वर्ष की कामना की गई है । यजुर्वेद में 'त्र्यायुषं जमदग्ने' मन्त्र से प्रतीत होता है कि मनुष्य की आयु की कल्पना तीन सौ वर्ष तक की गई है । किन्तु अथर्ववेद के इस मन्त्र से प्रतीत होता है कि यदि मनुष्य वेद निर्दिष्ट सूर्य के सब रुपों का पूरी तरहसे सेवन करे तो वह हजार वर्ष तक भी जी सकता है ।

मनोहर विद्यालंकार